The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 1 | January 2024
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति: अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की शैक्षिक संस्कृति का समन्वय

**महेंद्र सिंह लोधी**
पीएच.डी. शोधार्थी
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

**ARTICLE DETAILS**
**Research Paper**

**Keywords :**
*शिक्षा, संस्कृति, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, सामंजस्य*

**ABSTRACT**

शिक्षा और संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं । संस्कृति का स्थानांतरण करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है और शिक्षा संस्कृति सीखने के लिए। दोनों ही पहलू समाज व समुदाय के लिए आवश्यक है इसलिए इन दोनों का सामंजस्य होना बहुत जरूरी है। अगर किसी भी वर्ग की शिक्षा और संस्कृति में सामंजस्य नहीं होगा तो उस वर्ग या समाज का विकास होना संभव नहीं है। ऐसा ही है, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग की शिक्षा संस्कृति में। जो भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति आती है वह केवल इनकी असमानता को समानता पर लाने का प्रयास करती हैं, लेकिन वह यह नहीं देखते कि इस शिक्षा नीति का इनकी संस्कृति में सामंजस्य है की नहीं। पियरे बॉर्डियू ने सांस्कृतिक पूंजी की अवधारणा में कहा है कि, जो भी शिक्षा नीति होती है वह उस उच्च वैध संस्कृति के अनुरूप होती है। ऐसा ही ग्राम्शी ने अपनी सांस्कृतिक आधिपत्य की अवधारणा में कहा है जिस संस्कृति का आधिपत्य होता है वही शोषण करने वाली होती है। इससे बचने के लिए शिक्षा आवश्यक है। अर्थात् संस्कृति शिक्षा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति कि शैक्षिक स्थितियों में सुधार लाने के लिए शिक्षा और संस्कृति में सामंजस्य होना बहुत आवश्यक है।

भारत देश अनेकता में एकता की विशेषता रखता है। 'अनेकता में एकता' वाक्यांश का प्रयोग जवाहर लाल नेहरू ने भारत का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त किया था। जहाँ विभिन्न धर्म, जाति, प्रजाति, सम्प्रदाय, पंथ तथा भाषा के लोग रहते हैं और उनमें

*Corresponding Author: lodhi9607@gmail.com

एकता की भावना निहित है। भारत देश में अनेकता में एकता तो है, लेकिन भारतीय समाज व्यवस्था में अनेकों ऐसी बुराइयाँ हैं जिससे समाज में आज भी असमानता, जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, शोषण आदि होता है। भारतीय समाज में आर्थिक या सांस्कृतिक असमानता ही नहीं है, बल्कि सामाजिक तथा शैक्षिक असमानता भी है। हमारा राष्ट्र वर्ण और जाति जैसी अवधारणा के चक्र में फसा हुआ है। यहाँ जातिय स्तरीकरण पाया जाता है जहां उच्च जाति और निम्न जाति का स्तरीकरण है उच्च जाति में ब्राह्मण या सवर्ण को उच्च सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त है तो वहीं शूद्रों या अस्पृश्यों को निम्न सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त है। इन उच्च सवर्ण या जाति द्वारा निम्न जाति, शूद्र या अस्पृश्यों का शोषण प्राचीन समय से ही होता आ रहा है। इनसे इनके संपूर्ण अधिकार छीनकर उन्हें केवल ऊपर के वर्णों की सेवा करना था। यही कारण है कि आज जिन्हें अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति कहते हैं। उनमें शिक्षा का अभाव है।

शिक्षा और संस्कृति में घनिष्ठ संबंध होता है। जिस समाज की जैसी संस्कृति होती है उसी के अनुरूप उस समाज के लिए शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। जैसे कि अनुसूचित जाति की संस्कृति सामान्य वर्ग की तुलना में अलग है वहीं अनुसूचित जनजाति की संस्कृति भारत की अन्य सभी जातियों से अलग है। इन दोनों समूहों की संस्कृति और अन्य समूह की संस्कृति में जमीन आसमान का अंतर देखने को मिलता है। जब भी कोई राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा पर विचार-विमर्श करता है तो वह है केवल विकसित संस्कृति को देखकर ही शिक्षा नीति को अमल में लाता है। इन दोनों वर्गों की संस्कृति व शिक्षा को हमेशा से ही नज़र अन्दाज़ कर दिया जाता है। शिक्षा एक ऐसा साधन है जो किसी भी राष्ट्र या समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा से समाज में समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की भावना पनपती है। यह सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त करने का एकमात्र ऐसा उपकरण है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की शिक्षा की स्थिति अन्य वर्गों की तुलना में बहुत ही निराशाजनक रही है इसका कारण सवर्णों द्वारा इनका शोषण करना तथा उनकी संस्कृति है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की संस्कृति सवर्णों की संस्कृति से भिन्न है। मेघन का मानना है कि 'कामकाजी वर्ग की पृष्ठभूमि से बड़ी संख्या में सक्षम छात्र स्कूल में संतोषजनक मानकों को प्राप्त करने में विफल रहते हैं और इसलिए वह दर्जा प्राप्त करने में असफल होते हैं। जिसके वे हकदार हैं।' भारतीय समाज गैर बराबरी का समाज है जहाँ प्राचीन समय से ही संसाधनों का असमान वितरण होता रहा है संसाधनों का आसमान वितरण होने के कारण ही समाज के सभी लोगों का शिक्षा में एक समान प्रतिनिधित्व नहीं है। उन्हें शैक्षिक क्षेत्रों में समान अवसर नहीं मिलते, यदि जैसे - तैसे मिल भी जाते तो जाति भेदभाव, शोषण, अस्पृश्यता आदि के कारण वह इस अवसर को सफलता में तब्दील नहीं कर पाते।

**उद्देश्य:-**

(1) शिक्षा और संस्कृति में सम्बन्ध का अध्ययन।

(2) शिक्षा नीति और संस्कृति में सामंजस्य का मूल्यांकन।

(3) अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति समुदाय में शिक्षा और संस्कृति की समीक्षात्मक अध्ययन।

**प्रविधि:-**

यह शोध पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। जिसमें भारत सरकार द्वारा बनाई गई शिक्षा नीतियों का अध्ययन करने के लिए भारत सरकार द्वारा प्रकाशित विभिन्न रिपोर्ट, पत्र पत्रिकाओं, तथा पुस्तकों के द्वारा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की शिक्षा और संस्कृति का समीक्षात्मक एवं गुणात्मक अध्ययन किया गया है।

**शिक्षा और संस्कृति पर विद्वानों के विचार:-**

पियरे बॉर्डियू ने सांस्कृतिक पूंजी की अवधारणा में शिक्षा पर अपने विचार रखे हैं जिसमें उन्होंने रूढ़िवादी पुनरुत्पादन और ज्ञान तथा अनुभव की नवीन उत्पादन के बीच उत्पन्न तनाव का पता लगाया। उन्होंने पाया कि यह तनाव इस बात पर चिंतन करने से बढ़ जाता है कि किस विशेष सांस्कृतिक अतीत और वर्तमान को स्कूल में संरक्षित और पुनरुत्पादित किया जाना है। बॉर्डियू का तर्क है कि 'उच्च समूहों की संस्कृति है और इसलिए उनकी सांस्कृतिक पूंजी है जो स्कूलों में निहित है और दूसरे इससे सामाजिक पुनरुत्पादन होता है।' इन उच्च वर्ण, वर्ग या समूह की सांस्कृतिक पूंजी, प्रथाओं और संस्कृति के संबंध के रूप में स्कूल द्वारा प्राकृतिक और केवल उचित प्रकार की सांस्कृतिक पूंजी मानी जाती है और इसलिए इसे वैध माना जाता है। यह 'अपने सभी विद्यार्थियों से समान रूप से मांग करता है कि उन्हें वह सब मिले जो वह नहीं देता' यह वैध सांस्कृतिक पूंजी उन छात्रों को योग्यता के रूप में शैक्षिक पूंजी प्राप्त करने की अनुमति देता है जिनके पास यह है। इसलिए निम्न वर्ग के छात्र वंचित है। इस वर्ग को चाहिए कि अपनी योग्यता हासिल करें। उसके लिए उन्हें अपनी स्वयं की सांस्कृतिक पूंजी का आदान प्रदान कर वैध सांस्कृतिक पूंजी हासिल करनी होगी।

ग्राम्शी ने अपने सांस्कृतिक आधिपत्य की अवधारणा में श्रमिक वर्ग को प्रोत्साहित किया था कि, वे शिक्षा पर ज्यादा ज़ोर दे तथा अपने अंदर के बौद्धिक विचारों को उत्पन्न करें। मनुष्य इस सांस्कृतिक आधिपत्य शोषण से तभी बाहर निकल सकता है जब वह अपने विवेक का प्रयोग करें। शिक्षा जिसका मुख्य लक्ष्य है। जो मानव को अज्ञान के अंधेरे से बाहर निकाल

और शोषण से बाहर निकालने में मार्गदर्शन कर सकती है। वर्ग भेद की समस्या से निपटने में शिक्षा एकमात्र साधन है। समाज में शोषण, गरीबी, अशिक्षा आदि से मुक्ति तभी हो सकती है जब संस्कृति में समानता हो उनका मानना था कि सभी मनुष्य प्रतिभाशाली होते हैं लेकिन उन्हें अवसर नहीं मिलने के कारण इस प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। यदि इन कमजोर वर्गों को अवसर मिले तो वह भी अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित कर सकते हैं।

**राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ:-**

आज भारत देश को स्वतंत्र हुए 77 वर्ष हो रहे हैं। हम ब्रिटिश या बाहरी हुकूमत की गुलामी से तो आजाद हो गए पर भारतीय जातिवादी मानसिकता से आज भी गुलाम बने हुए हैं। जिससे आजाद होना अभी बाकी है। जाति व्यवस्था ना सिर्फ राष्ट्रीय निर्माण में बाधा पहुंचाती है बल्कि किसी समुदाय या समूह को भी विकसित होने से भी रोकती है। भारतीय समाज जातिय संरचना पर आधारित है। इसी जातीय व्यवस्था के कारण आज अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति में शिक्षा का अभाव पाया जाता है। 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू किया गया और इसमें अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को समाज में एक समान लाने के लिए विशेष संरक्षण व प्रावधान प्रदान किए गए। इन वर्गों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में भी जोर दिया गया। सर्वप्रथम 1964 – 66 में शिक्षा में समानता की बात कोठारी आयोग ने की 'जब तक भारत में ऐसी स्कूल प्रणाली स्थापित नहीं होगी जिसके जरिए हर बच्चे को चाहे वह किसी भी वर्ग, जाति, संप्रदाय, क्षेत्र और लिंग का हो समान गुणवत्ता वाली शिक्षा दी जाए।' अनुसूचित जातियां और अनुसूचित जनजातियां सदैव ही अशिक्षा, निर्धनता अंधविश्वास और अज्ञानता के कारण शोषण और दमन का शिकार हुई है। सन 1985 में भारत सरकार ने सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने की घोषणा की और जिसे 1986 में लागू किया गया। इस शिक्षा नीति का उद्देश्य समान तथा समावेशी शिक्षा का रखा गया। इस नीति ने भी अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने के लिए भेदभाव व शोषण रहित शिक्षा पर ज़ोर दिया। वर्तमान समय में 29 जुलाई 2020 को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण हुआ और इसमें भी इन वर्गों के लिए शिक्षा में समानता के अवसर और समावेशी शिक्षा का लक्ष्य रखा गया।

अभी तक की जो भी शिक्षा नीति बनी उन सभी ने इन वर्गों की शिक्षा में समानता लाने का उद्देश्य रखा। जिससे इन वर्गों की शिक्षा में सुधार भी हुआ। लेकिन आज भी इन वर्गों में शैक्षिक असमानता देखने को मिलती है। विभिन्न आयोग और सरकारी नीतियों के बावजूद अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति की शैक्षिक स्थिति में परिवर्तन न के बराबर हैं और इन वर्गों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिनिधित्व भी कम है। इसका कारण जातिगत भेदभाव, संसाधनों का आसमान वितरण, अस्पृश्यता

या शोषण तथा प्राचीन भारतीय हिंदू जाति व्यवस्था है। जिस पर लगभग कई विद्वान भी अध्ययन कार्य कर चुके हैं, लेकिन इनकी संस्कृति पर अधिकांशतः किसी का ध्यान नहीं जाता। इन समुदायों की संस्कृति हिंदू संस्कृति जो एक वैध संस्कृति मानी जाती है से भिन्न है। और जो भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्मित होती है वह उस वैध संस्कृति को ध्यान में रखकर बनाई जाती है इसलिए इन समुदायों में शिक्षा का सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता है। इन समुदायों को अपनी भाषा और विद्यालय भाषा में तालमेल बैठाना कठिन होता है। जिसके कारण छात्र स्कूली अध्ययन बीच में ही छोड़ देते हैं। उनका रहन- सहन, खान -पान आदि सभी स्कूली वातावरण और वैध संस्कृति जिसे आदर्श मानकर शिक्षा नीति बनाई गई है। में सामंजस्य बैठाने में समस्या होती है।

**उपसंहार:-**

निश्चित रूप से किसी भी राष्ट्र या समाज की शिक्षा का स्वरूप उस राष्ट्र या समाज की संस्कृति के अनुरूप होता है। भारत जैसे विषमता मूलक समाज में शिक्षा का स्वरूप बनाना बहुत कठिन कार्य है। एक विकसित राष्ट्र के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है इसलिए शिक्षा का स्वरूप भी निर्मित करना आवश्यक है। एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जो सभी समुदायों की संस्कृति के साथ सामंजस्य कर सके। 19वीं शताब्दी से लेकर आज तक शिक्षा के लिए अनेकों आयोग और राष्ट्रीय नीतियों का निर्माण हुआ, लेकिन फिर भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आज भी असमानता बनी हुई है। एक वर्ग शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में अधिक प्रतिनिधित्व रखता है तो दूसरा वर्ग इस प्रतिनिधित्व की दौड़ में शुरुआत कर रहा होता है। शिक्षा शुरू करने वाला वर्ग अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति है। इस असमानता को दूर करने के लिए सरकार अनेक आयोग और नीतियों का निर्माण करती है फिर भी यह असमानता कम होती नज़र नहीं आ रही। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जो भी नीति बनाई जाती है वह उस संस्कृति या वर्ग के आधार पर होती है जो इन वर्गों का वर्षों से शोषण करता आ रहा है। जिस संस्कृति ने इनसे शिक्षा का अधिकार छीना हो। वह इन वर्गों का भला कैसे सोच सकती है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का शिक्षा में प्रतिनिधित्व कम होने का मुख्य कारण उनकी सांस्कृतिक विभिन्नता है सरकार जो भी शैक्षिक नीति बनती है वह नीति केवल उस वैध संस्कृति के आधार रूप में होती है। जो भारतीय समाज की आधिपत्य संस्कृति है जिसने इन वर्गों का हमेशा से शोषण किया और कर रही है। यही कारण है कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्र सांस्कृतिक रूप से शिक्षा में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते। अगरहम वाकई में शिक्षा के स्तर में समानता लाना चाहते हैं तो हमें शिक्षा नीति में इनकी संस्कृति का सामंजस्य बिठाना नितांत आवश्यक है।

**संदर्भ सूची:-**


1. कुमार) .अरुण ,2015 .(*आधुनिक शिक्षा एवं दलित*. रावत पब्लिकेशन.नई दिल्ली :
2. अहूजा) .राम ,2016 .(*भारतीय समाज*. रावत पब्लिकेशननई दिल्ली :,224 .
3. मानव संसाधन विकास मंत्रालय) .2020 .(*राष्ट्रीय शिक्षा नीति*. भारत सरकार.
4. Milner, Andrew & Browitt, Jeff. (2003). *Contemporary Cultural Theory.* Rawat publication. New Delhi. 86-91.
5. Vatsyayan, Kapila. (2018). *Role of Culture in Development.* D.K. Printworld. New Delhi.67-70.
6. Omvedt, Gail. (2020). *Cultural Revolt in a Colonial Society.* Manohar publication. New Delhi.
7. A. Haviland, William. (1999). *Cultural Anthropology.* Harcourt Brace college publishers. New Delhi.
8. Singh, Yogendra. (2009). *Culture Change in India Identity & Globalisation.* Rawat publication. New Delhi.
9. Haralambos, M. & Head, R.M. (2016). *Sociology themes and perspectives.* Oxford University press. New Delhi, 257.
10. अनेकता में एकता. Available on www.topper.com
11. संस्कृति और शिक्षा. Available on Addastudy.com